

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ फरवरी २०१९
वर्ष : २८ अंक : ८
(निरंतर अंक : ३१४)
पृष्ठ संख्या : ३६
(आवरण पृष्ठ सहित)

श्री माँ महेंग्रीबाजी की
गौद में पूज्य बापूजी



अपने सद्गुरु साहें श्री लीलाशाहजी
का पूजन करते हुए पूज्य बापूजी

माता-पिता एवं गुरु हमारे
हितैषी हैं, अतः हम उनका आदर तो
करें ही, साथ ही उनमें ईश्वरीय
अंश को निहारकर उन्हें प्रणाम करें,
उनका पूजन करें। - पूज्य बापूजी

तो आओ मनायें
१४ फरवरी को
मातृ-पितृ पूजन दिवस



महाशिवरात्रि : ४ मार्च

महाशिवरात्रि देह से परे देहातीत आत्मा में
विश्रान्ति पाने का पर्व है, संयम और तप
बढ़ाने का पर्व है। - पूज्य बापूजी

पृष्ठ ११



होलिका दहन : २० मार्च
धुलेंडी : २१ मार्च १२



विनाशकारी होली

रासायनिक रंगों एवं कुरीतियों से
स्वास्थ्य व जीवनीशक्ति का हास



स्वास्थ्यकारी होली

पूज्य बापूजी की प्रेरणा से पलाश-फूल झाड़ि के
प्राकृतिक रंगों से वैदिक होली खेलकर स्वास्थ्य-लाभ



सत्य-पथ के साधकों के लिए वेद भगवान का संदेश



मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन् । माकीं ब्रह्मद्विषो वनः ॥*

‘(हे मेरे आत्मन् ! हे मेरे मन !) तुझे मूढ़, अपनी पालना (केवल अपने शरीर, इन्द्रियों की तृप्ति) चाहनेवाले स्वार्थ-पीड़ित लोग नष्ट न करें, दबा न दें और उपहास करनेवाले, मखौल उड़ानेवाले लोग भी दबा न दें । तू ब्रह्मज्ञान व परमेश्वर से प्रीति न रखनेवाले मनुष्यों का सेवन न कर, संगति न कर ।’ (ऋग्वेद : मंडल ८, सूक्त ४५, मंत्र २३; सामवेद : मंत्र ७३२; अथर्ववेद : कांड २०, सूक्त २२, मंत्र २)

वेद भगवान कहते हैं : हे ईश्वर-मार्ग के पथिक ! हे ब्रह्मज्ञान में प्रीति रखनेवाले साधक ! हे आत्मन् ! जब तू कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग द्वारा सत्यस्वरूप परमात्मा में स्थिति पाने के लिए, लोक-मांगल्य के लिए अग्रसर होता है तब संसार की अनेक स्वार्थी शक्तियाँ तेरा विरोध करने के लिए आगे आ जायेंगी, तुझे आगे बढ़ने से रोकना चाहेंगी । जब तू व्यापक समाज के हित के लिए ‘सबका मंगल, सबका भला’ इस उद्घोष के अनुरूप दैवी कार्य में, ईश्वर और सद्गुरु के सिद्धांत में गोता मार के और सेवायोगी पुण्यात्माओं से कंधे-से-कंधा मिला के कार्य करने लगेगा तब अनेक अज्ञानी मूढ़ उसे न समझने के कारण तेरा विरोध करेंगे, तेरी निंदा करेंगे । जिनके स्वार्थ में उन सत्प्रवृत्तियों से धक्का लगेगा या जिन्हें ऐसा होने का भय होगा वे ‘अविष्यु’ (अपनी पालना चाहनेवाले) स्वार्थ-पीड़ित लोग तेरे मार्ग में निःसंदेह रोड़े अटकायेंगे, चुगली करेंगे, भ्रम फैलायेंगे और तुझे नाना प्रकार के कष्ट देंगे परंतु हे मेरे आत्मन् ! हे दैवी कार्य में लगे पुण्यात्मा ! तू इनसे घबराना मत, दबना मत, नष्ट मत

होना । तू अंत में इन सबको अवश्य जीत लेगा । तेरा तेज अदम्य है ।

श्री गोविंदपादाचार्यजी के सत्शिष्य आद्य शंकराचार्यजी के समाजहित के कार्यों को विरोधी तत्त्वों ने रोकने का प्रयत्न किया परंतु उन्होंने एवं उनके शिष्यों ने अनेक कठिनाइयाँ सहते हुए अपने सद्गुरु के प्रसाद को समाज में बाँटा व सनातन धर्म की ध्वजा फहरायी ।

अध्यात्म-मार्ग के पथिकों को संदेश देते हुए स्वामी रामतीर्थजी कहते हैं : “तुम एकमात्र सत्य पर आरुढ़ होओ । इस बात से भयभीत मत होओ कि अधिकांश लोग तुम्हारे विरुद्ध हैं ।”

हे सत्कर्मनिष्ठ साधक ! तेरे माध्यम से होनेवाले भौतिक, दैविक एवं आध्यात्मिक समाजोत्थान के दूरदृष्टिपूर्ण मंगलकारी सत्कार्य, जिन्हें साधारण जनता ने अभी तक नहीं अपनाया है, उन्हें देखकर कुछ स्वार्थ-पीड़ित लोग तेरी खिल्ली उड़ायेंगे, बड़े तीक्ष्ण व्यंग्य करेंगे पर हे आत्मन् ! तू कभी इनसे प्रभावित या हतोत्साहित मत होना अपितु उद्विग्नतारहित, सम व शांत रहकर निर्लेप भाव से इन सबको दया के पात्र समझ के बीतने देना, गुजरने देना ।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

* सामवेद में ‘मा की’ एवं ‘ब्रह्मद्विषं’ दिया गया है ।



ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २८ अंक : ८ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३१४
प्रकाशन दिनांक : १ फरवरी २०१९
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
माघ-फाल्गुन वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,
मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैनुफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों,
पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व
न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,
मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैनुफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactures) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

केवल 'ऋषि प्रसाद' पृष्ठछात्र हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
Email : ashramindia@ashram.org
Website : www.ashram.org,
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्व देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

- ❖ सत्य-पथ के साधकों के लिए वेद भगवान का संदेश २
- ❖ गुरु संदेश ❖ फास्ट युग में फास्ट प्रभुप्राप्ति हेतु... ४
- ❖ सब पदार्थों और वृत्तियों में एक ही चेतन - साँई श्री लीलाशाहजी ५
- ❖ परिप्रश्नेन... ५
- ❖ ब्रह्मज्ञानी गुरु की युक्ति दिलाती दोषों से मुक्ति ६
- ❖ भगवन्नाम महिमा ❖ रामु न सकहिं नाम गुन गाई ७
- ❖ वे ज्ञान से वंचित रह जाते हैं ९
- ❖ बिरहु बिषादु बरनि नहिं जाई १०
- ❖ पर्व मांगल्य ❖ ...आत्मविश्रान्ति पाने का पर्व ११
- ❖ ज्ञान की होली खेल के जन्म-मरण से छूट जाओ
- ❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग १४
- ❖ कैसे करुणासिंधु, भक्तवत्सल, योगक्षेम-वाहक हैं मेरे गुरुदेव !
- ❖ काव्य गुंजन १६
- ❖ कितने ऊँचे भाग्य हमारे ऐसे गुरु को पाया है - सु. ॐकार
- ❖ ऋषि ज्ञान प्रसाद ❖ यह सेवा तो अपना जीवन धन्य करने के लिए है १७
- ❖ योग-वेदांत-सेवा ❖ पुरुषार्थ से ही सम्भव है पूर्ण सुख की प्राप्ति १७
- ❖ विद्यार्थी संस्कार ❖ असम्भव-से कार्य भी हो जाते हैं सम्भव, कैसे ? १८
- ❖ उन्नत जीवन के आधार... - कु. वेदिका
- ❖ तेजस्वी युवा ❖ संकल्पशक्ति से सब सम्भव २०
- ❖ महिला उत्थान ❖ रूप-लावण्य को त्यागा, भक्ति को पाया २१
- ❖ वैराग्य शतक ❖ आखिर क्या है उनके त्याग का रहस्य ! २२
- ❖ तत्त्व दर्शन ❖ ब्रह्मज्ञान के अतिरिक्त साधन २३
- ❖ भक्तगाथा ❖ श्रद्धा का बल, हर समस्या का हल २४
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
- ❖ जीवन जीने की कला ❖ साधन-जगत का मेरुदंड : मंत्रजप २७
- ❖ संस्था समाचार ❖ उत्तरायण शिविर पर सम्पन्न हुए... २८
- ❖ साधकों के लिए सेवा का सुनहरा अवसर ! २९
- ❖ आप कहते हैं... ❖ बापूजी के विरुद्ध हो रहा है अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र २९
- ❖ महिलाओं की आवाज - गलेश्वर यादव
- ❖ शरीर स्वास्थ्य ❖ प्राकृतिक शुद्धिकारक व स्वास्थ्यवर्धक मूली ३१
- ❖ अनेक रोगों में लाभदायी बिना खर्च का प्रयोग : जलनेति
- ❖ वसंत ऋतु की बीमारियों में फायदेमंद औषधियाँ
- ❖ अनमोल कुंजियाँ ❖ इससे लक्ष्मी का आगमन होगा ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

			
रोज सुबह ७-०० बजे	रोज रात्रि १०-०० बजे	www.ashram.org/live	रोज सुबह ७ व रात्रि ९ बजे

- ❖ 'साधना प्लस न्यूज' चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. ५४०), डिश टीवी (चैनल नं. ६७९), रिलायंस डिजिटल टीवी (चैनल नं. ४३१), बिहार में मौर्या सिटी (चैनल नं. ३११), राँची में जीटीपीएल व डेन केबल पर तथा 'JioTV' एन्ड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
- ❖ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। ❖ 'प्रार्थना' चैनल जम्मू में TechOne Cable पर उपलब्ध है।

Download Rishi Prasad Official, Rishi Darshan & Mangalmay Official Apps

फास्ट युग में फास्ट प्रभुप्राप्ति हेतु...

- पूज्य बापूजी

आज के इस 'फास्ट युग' में जैसे हम भोजन पकाने, कपड़े धोने, यात्रा करने, संदेश भेजने आदि व्यावहारिक कार्यों में फास्ट हो गये हैं, वैसे ही क्यों न हम प्रभु का आनंद, प्रभु का ज्ञान पाने में भी फास्ट हो जायें ?

पहले का जीवन शांतिप्रद जीवन था इसलिए सब काम शांति से, आराम से होते थे एवं उनमें समय भी बहुत लगता था। लोग भी दीर्घायु होते थे लेकिन आज हमारी जिंदगी इतनी लम्बी नहीं है कि सब काम शांति और आराम से करते रहें। सतयुग, त्रेता, द्वापर में लोग हजारों वर्षों तक जप-तप-ध्यान आदि करते थे, तब प्रभु को पाते थे। किंतु आज के मनुष्य की न ही उतनी आयु है, न ही उतनी सात्विकता, पवित्रता और क्षमता है कि वर्षों तक माला घुमाता रहे और तप करता रहे। अतः आज की इस 'फास्ट लाइफ' में प्रभु की मुलाकात करने में भी 'फास्ट' साधनों की आदत डाल देनी चाहिए। उस प्यारे प्रभु से हमारा तादात्म्य भी ऐसा 'फास्ट' हो कि

दिल-ए-तस्वीर है यार !

जब भी गर्दन झुका ली, मुलाकात कर ली।

बस, आप यह कला सीख लो। आप पूजा-कक्ष में बैठें तभी आपको भक्ति, ज्ञान या प्रेम का रस आये ऐसी बात नहीं है वरन् आप घर में हों या दुकान में, नौकरी कर रहे हों या फुरसत में, यात्रा में हों या घर के किसी काम में... हर समय आपका ज्ञान, आनंद एवं माधुर्य बरकरार रह सकता है।

युद्ध के मैदान में अर्जुन निर्लेप नारायण तत्त्व का अनुभव कर सकता है तो आप चालू व्यवहार में उस परमात्मा का आनंद-माधुर्य क्यों नहीं पा सकते ? गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं :

**तन सुखाय पिंजर कियो, धरे रैन दिन ध्यान ।
तुलसी मिटे न वासना, बिना विचारे ज्ञान ॥**

शरीर को सुखाकर पिंजर (कंकाल) कर देने की भी आवश्यकता नहीं है। व्यवहारकाल में जरा-सी सावधानी बरतो और कल्याण की कुछ बातें आत्मसात् करते जाओ तो प्रभु का आनंद पाने में कोई देर नहीं लगेगी।

तीन बातों से जल्दी कल्याण होगा

पहली बात : भगवद्-स्मरण।

सच्चे हृदय से हरि का स्मरण करो। संत तुलसीदासजी ने कहा है :

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ ।

नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ॥

(श्री रामचरित. बा.कां. : २७.१)

भाव से, कुभाव से, क्रोध से, आलस्य से भी यदि हरि का नाम लिया जाता है तो दसों दिशाओं में मंगल होता है तो फिर सच्चे हृदय से हरि का स्मरण करने से कितना कल्याण होगा !

जपात् सिद्धिः जपात् सिद्धिः

जपात् सिद्धिर्न संशयः ।

जप करते रहो... हरि का स्मरण करते रहो... इससे आपको सिद्धि मिलेगी। आपका मन सात्विक होगा, पवित्र होगा और भगवद्‌रस प्रकट होने लगेगा।

दूसरी बात : प्राणिमात्र का मंगल चाहो। यहाँ हम जो देते हैं, वही हमें वापस मिलता है और कई गुना होकर मिलता है। यदि आप दूसरों को सुख पहुँचाने का भाव रखेंगे तो आपको भी अनायास ही सुख मिलेगा। अतः प्राणिमात्र को सुख पहुँचाने का

गुरु
संदेश

ज्ञान की होली खेल के जन्म-मरण से छूट जाओ - पूज्य बापूजी

(होलिका दहन :

२० मार्च, धुलेंडी : २१ मार्च)

संतप्त हृदयों को शीतलता और शांति की सुरभि देने की शक्ति, कार्य करते हुए संतुलित चित्त और सब परिस्थितियों में समता के साम्राज्य पर बैठने की योग्यता... कहाँ तो मनुष्य को इतनी सारी योग्यताएँ मिली हुई हैं और कहाँ छोटे-मोटे गलत काम करके मनुष्य दर-दर की ठोकरें खा रहा है। जन्म-मरण की दुःखद पीड़ाओं में, राग-द्वेष एवं विकारों में गिरकर चौरासी लाख योनियों की पीड़ा की तरफ घसीटा जा रहा है। उत्सव के द्वारा, साधना के द्वारा नेत्रों में जगमगाता आनंद उत्पन्न करिये, संतप्त हृदयों को शीतलता देने का सामर्थ्य जगाइये। व्यवहार में संतुलन बना रहे ऐसी समता से अंतःकरण सुसज्ज बनाइये और कितनी भी उपलब्धियाँ हो जायें फिर भी स्मरण रखिये कि 'यह स्वप्नमात्र है।' सुख-दुःख में सम रहने की सुंदर समता का विकास कीजिये तो आपका उत्सव बढ़िया हो गया। आपसे जो मिलेगा उसे भी हितकारी संस्कार और हित मिलेगा।

इस उत्सव का उद्देश्य

होली का उत्सव मनुष्यों के संकल्पों में कितनी शक्ति है इस बात की स्मृति देता है और उसके साथ-साथ सज्जनता की रक्षा करने के लिए लोगों को शुभ संकल्प करना चाहिए यह संकेत भी देता है। भले दुष्ट व्यक्ति के पास राज्य-सत्ता अथवा वरदान का बल है, जैसे होलिका के पास था, फिर भी दुष्ट को अपनी दुष्ट प्रवृत्ति का परिणाम देर-सवेर भुगतना पड़ता है। इसलिए होलिकोत्सव से सीख



आध्यात्मिक दृष्टि से देखें
तो होली का पर्व हमें
अंतर्मुख होकर
आत्मस्वरूप का आवरण
बनी हुई दुष्ट वासनाओं को
जलाने का संदेश देता है।

लेनी चाहिए कि अपनी दुष्प्रवृत्तियाँ, दुष्ट चरित्र अथवा दुर्भावों का दहन कर दें और प्रह्लाद जैसे पवित्र भावों का भगवान भी पोषण करते हैं और भगवान के प्यारे संत भी पोषण करते हैं तो हम भी अपने पवित्र भावों का पोषण करें, प्रह्लाद जैसे भावों का पोषण करें। वास्तव में इसी उद्देश्यपूर्ति के लिए यह उत्सव है। लेकिन इस उत्सव के साथ हलकी मति के लोग जुड़ गये। इस उत्सव में गंदगी फेंकना, गंदी हरकतें करना, गालियाँ देना, शराब पीना और वीभत्स कर्म करना - यह उत्सव की गरिमा को ठेस पहुँचाना है।

कहाँ भगवान श्रीकृष्ण, शिव और प्रह्लाद के साथ जुड़ा उत्सव और अभी गाली-गलौज, शराब-बोतल और वीभत्सता के साथ जोड़ दिया नशेड़ियों ने। इससे समाज की बड़ी हानि होती है। यह बड़ों की बेइज्जती करने का उत्सव नहीं है, हानिकारक रासायनिक रंगों से एक-दूसरे का मुँह काला करने का उत्सव नहीं है। यह उत्सव तो एक-दूसरे के प्रति जो कुसंस्कार थे उनको ज्ञानाग्निरूपी होली में जलाकर एक-दूसरे की गहराई में जो परमात्मा है उसकी याद करके अपने जीवन में नया उत्सव, नयी उमंग, नया आनंद लाने और आत्मसाक्षात्कार की तरफ, ईश्वर-अनुभूति की तरफ बढ़ने का उत्सव है। यह उत्सव शरीर तंदुरुस्त, मन प्रसन्न और बुद्धि में बुद्धिदाता का ज्ञान प्रविष्ट हो - ऐसा करने के लिए है और इस उत्सव को इसी उद्देश्य से मनाना चाहिए।

आप भी ज्ञानमय होली खेलो

इस होली के रंग में यदि ज्ञान का, ध्यान का रंग लग जाय, ईश्वरीय प्रेम का रंग लग जाय तो फिर

कैसे करुणासिंधु, भक्तवत्सल, योगक्षेम-वाहक हैं मेरे गुरुदेव !

(‘दूरद्रष्टा, करुणासिंधु, ब्रह्मवेत्ता हैं मेरे गुरुदेव !’ गतांक से आगे)

धोलापाणा (जि. अरवल्ली, गुजरात) के कनुभाई तराल पूज्य बापूजी के और भी कुछ रोचक, विस्मयकारी जीवन-प्रसंग बताते हैं :

एक सेवफल ने कर दिया दुगना वजन

पहले मेरा शरीर बहुत दुर्बल एवं पतला था, केवल ४५ किलो वजन था। एक बार पूनम के दिन गुरुदेव के दर्शन हेतु लाइन में खड़ा था। बापूजी मधुर मुस्कान देते हुए मुझसे बोले : “हमारा शिष्य ऐसा कैसा लगता है! (अपनी ओर इशारा करते हुए) ऐसा बन ऐसा!”

पूज्यश्री ने बड़ी मौज में आकर प्यार से मेरी ओर एक सेवफल फेंका और बोले : “चल ले! यह खा जा, बन जायेगा।”

मैंने वह प्रसाद खाया। कुछ ही महीनों में मेरा वजन ९० किलो हो गया। वजन बढ़ने के साथ शरीर में जो दुर्बलता थी वह भी दूर हो गयी। मैं अब भी लगातार ७२ घंटे काम कर सकता हूँ। मुझे कितना भी पैदल चलने या काम करने पर कोई थकान महसूस नहीं होती।

...और चोर ही सच्चाई बोलने लगा

मैंने सन् १९९० में जब हर पूनम पर पूज्य बापूजी के दर्शन करने का व्रत लिया उसी समय हर रविवार को मौन रखने का भी नियम लिया था।

एक बार मैं पूनम-दर्शन के लिए वडोदरा से दिल्ली जा रहा था। रेलगाड़ी में जेबकतरे ने एक व्यक्ति का बटुआ चुरा लिया। उस व्यक्ति के शिकायत करने पर पुलिसवाले आये और एक-एक की जाँच करने लगे।

उस दिन रविवार था अतः मेरा मौन-व्रत था। पुलिसवाले मेरे पास आये पर मैंने मौन नहीं खोला।

मैं पेन निकाल के लिख के बताने ही वाला था इतने में एक पुलिसवाला मुझे चोर समझ के मारने लगा। चोर पकड़ा गया ऐसा समझ के और २-४ पुलिसवाले आ गये। इतने में

गुरुदेव की ऐसी लीला हुई कि खुद चोर ही बोल पड़ा : “अरे! इसको मत पीटो। बटुआ मैंने चुराया है, यह देखो।” सच्चाई सामने आने पर पुलिसवालों ने मुझसे माफी माँगी।

कैसे भक्तवत्सल हैं पूज्य गुरुदेव! मेरा मौन-व्रत था तो पूज्यश्री ने चोर के मुँह से बुलवा दिया। गुरुदेव की कृपा से आज भी मेरा मौन-व्रत का नियम निरंतर चल रहा है।

नियम, व्रत की महिमा समझाते हुए पूज्यश्री सत्संग में बताते हैं कि “व्रत का फल होता है निष्ठा। आपकी निष्ठा दृढ़ हो तो कोई भी विघ्न-बाधा या मुसीबत आपके संकल्पबल से दूर हो जायेगी। आपके जीवन में कोई-न-कोई व्रत-नियम होना चाहिए। इससे आपका मनोबल दृढ़ होगा।”

दो ही शिविर हुए थे और...

१९९७ की बात है। मेरी शादी को ४ साल हो गये थे पर मेरे घर कोई संतान नहीं थी। डॉक्टरों ने मेरी पत्नी को गर्भाशय की गम्भीर समस्या बतायी और कहा : “इनको बच्चा नहीं हो सकता।”

मैं बापूजी के दर्शन करने जाता था लेकिन मन में कुछ माँगने की इच्छा नहीं होती थी। एक बार मैंने गुरुदेव के सत्संग में सुना कि ‘जिनको संतान





विद्यार्थी संस्कार



असम्भव-से कार्य भी हो जाते हैं सम्भव, कैसे ?

सन् १८०९ में फ्रांस में एक बालक का जन्म हुआ, नाम रखा गया लुई। एक दिन खेल-खेल में उसकी आँख में चोट लग गयी और एक आँख की रोशनी चली गयी। कुछ दिनों बाद उसकी दूसरी आँख भी खराब हो गयी। उसका दाखिला दृष्टिहीनों के विद्यालय में करा दिया गया। वहाँ उसे कागज पर उभरे हुए कुछ अक्षरों की सहायता से पढ़ना सिखाया गया। लुई ब्रेल को इसमें अधिक समय लगा और काफी असुविधा हुई। अतः उसने निर्णय लिया कि वह एक ऐसी नयी लिपि का आविष्कार करेगा जिसके द्वारा कम परिश्रम और कम समय में हर दृष्टिहीन व्यक्ति अच्छी प्रकार से साक्षर हो सके।

समय बीतता गया। वह कभी-कभी प्रयास करता लेकिन विफल हो जाता। वह सोचता कि 'जीवन बहुत लम्बा है। आज नहीं तो कल मैं सफल हो जाऊँगा।' एक रात उसे स्वप्न दिखाई दिया कि उसकी मृत्यु हो गयी है और लोग उसे दफनाने के लिए ले जा रहे हैं। अचानक उसकी आँख खुल गयी। उसका चिंतन तुरंत सक्रिय हो गया। उसे इस बात का बहुत दुःख हुआ कि इतना समय व्यर्थ में ही चला गया। यदि इस अवधि में वह पूरी लगन से, गम्भीरतापूर्वक प्रयास करता तो अब तक कोई नयी लिपि विकसित करने में सफल हो सकता था।

उसने संकल्प किया कि 'अब तक मैंने समय को नालियों में बहनेवाले पानी की तरह व्यर्थ जाने दिया है लेकिन अब मैं एक-एक क्षण का सदुपयोग करूँगा।' और इसे मन-ही-मन दोहराकर उसने एक महीने की अवधि निश्चित की और तत्परतापूर्वक अपने कार्य में जुट गया।

जो समय का सम्मान करता है, समय उसीको

सम्मानित बना देता है। एक माह की अवधि में ही उसने ऐसी लिपि का विकास कर दिया जिसके द्वारा आज असंख्य नेत्रहीन लोग शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बाद में ब्रेल ने उस लिपि को और भी उन्नत किया। आज वह लिपि 'ब्रेल लिपि' के नाम से विश्वप्रसिद्ध है।

एकाग्रता, लगन, समय का सदुपयोग और देहाध्यास भूलकर व्यापक जनहित के लिए सत्प्रयास - ये ऐसे सद्गुण हैं जो ईश्वरीय सहायता को अपनी ओर आकर्षित करते हैं और जहाँ ईश्वरीय सहायता उपलब्ध हो जाती है वहाँ देश-काल-परिस्थिति की सुविधा-असुविधा तथा शरीर, मन, बुद्धि की योग्यताओं की सीमाएँ लाँघकर असम्भव लगनेवाले कार्य भी सम्भव हुए दिख पड़ते हैं। लुई ब्रेल को निष्काम सेवाभाव के साथ यदि किन्हीं वेदांतनिष्ठ सद्गुरु के द्वारा उस अनंत शक्ति-भंडार परमात्मा के स्वरूप का कुछ पता भी मिल जाता तो शायद वह अंध लोगों के क्षेत्र में मात्र एक सामाजिक कार्यकर्ता न रहता अपितु संत सूरदासजी की तरह अपना ज्ञान-नेत्र खोलकर दूसरों के लिए भी आध्यात्मिक प्रकाशस्तम्भ बन सकता था। □

प्रेरक पंक्तियाँ

धरती चलती सूरज चलता,
चलते चाँद सितारे हैं।
आत्मविश्वास से कदम बढ़ाना,
जैसे सद्गुरु-इशारे हैं।
क्रियाशील हो शक्ति जगाओ,
बदल जायें नजारे हैं।
मंजिल अवश्य मिलेगी तुमको,
आत्मदेव साथ तुम्हारे हैं॥

संतों की हितभरी अनुभव-वाणी

निर्दोष को दोष लगाना पाप है



– महात्मा बुद्ध

जो शुद्ध हैं, निर्मल हैं, ऐसे निर्दोष पुरुष को जो दोष लगाता है, उस मूर्ख को ही वह पाप लगता है, जिस तरह वायु के मुँह पर फेंकी धूल फेंकनेवाले के मुँह पर लगती है।

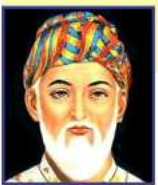
वह कुत्ते के समान होता है



– संत देवराहा बाबा

किसीकी अकारण निंदा मत करो, प्रशंसा भी न करो। जो अकारण किसीकी निंदा करता चलता है, वह भ्रमित है। ऐसे लोग विश्वास के पात्र नहीं होते और ऐसों से मेलजोल तो दूर, बातचीत का संबंध भी नहीं रखना चाहिए। जो सामने तो गुणगान और परोक्ष में (पीठ-पीछे) निंदा करे, वह कुक्कुर (कुत्ते) के समान होता है। ऐसों की संगति तुरंत छोड़ देनी चाहिए।

नीच का साथ छोड़ दो



– रहीमजी

नीच (अधर्मी, पापी, निंदक) का संग अंगार के समान त्याग दो। जलता हुआ अंगार अंग को जला देता है और टंडा हो जाने पर कालिख लगा देता है।

परमेश्वर ही गुरुरूप में आते हैं



– स्वामी मुक्तानंदजी

गुरु और भगवान में कोई अंतर नहीं, परमेश्वर ही गुरुरूप में प्रकट हो आते हैं।

कैसे हो ज्ञानज्योति की प्राप्ति ?



– संत दादू दयालजी

गुरुदेव ऐसा ज्ञानोपदेश करते हैं जिसके द्वारा सब संशय नष्ट हो जाते हैं और प्राणी के पीछे काल नहीं लगता। वे निजस्वरूप जैसा है, वैसा भली प्रकार समझा देते हैं। उन अमर ब्रह्मभाव को प्राप्त हुए गुरुदेव के आसन के पास (जहाँ उनकी प्रज्ञा सदा ठहरती है, उस आत्म-परमात्म स्वरूप में तदाकार) ही रहना चाहिए। वहाँ ज्ञानरूप परम ज्योति प्राप्त होती है। गुरु से प्राप्त ज्ञानरूप परम तेज को दृढ़ता से धारण करना चाहिए और उसके धारण द्वारा 'स्व'स्वरूप को प्राप्त करके ही रहना चाहिए।



संयम से 'सत्' में स्थिति

– योगी गोरखनाथजी

बाल्यावस्था और यौवन में जो व्यक्ति संयम के द्वारा इन्द्रिय-निग्रह करते हैं (इन्द्रियों को रोकते हैं), वे समय-असमय में सर्वदा अपने 'सत्' स्वभाव में स्थित रह सकते हैं।

उनकी शरण कभी मत छोड़ना



– संत एकनाथजी

हे मेरे मन ! जिन गुरुदेव ने तुझे संसार के बंधनों से मुक्त किया है, तू उनकी शरण कभी मत छोड़ना। संसाररूपी अजगर के काटने से तुझ पर जो विष का प्रभाव हुआ है, उसे उतारने के लिए सद्गुरु उत्तम धन्वंतरि (वैद्यराज) हैं। तू खूब ध्यानपूर्वक सुन ले कि ऐसी गुरुरूपी माँ बहुत कष्टों से प्राप्त हुई है। सद्गुरु जनार्दन स्वामी ने रंक एकनाथ का उद्धार किया है और संसार में वे ही मेरे सखा हैं।

पूज्य बापूजी के जीवन, उपदेश और योगलीलाओं पर आधारित
आध्यात्मिक मासिक विडियो मैगजीन

ऋषि दर्शन

e-Rishi Darshan (मोबाइल App में) सदस्यता शुल्क*

भारत में } वार्षिक - ₹ 840 900
पंचवार्षिक - ₹ 4200 800

विदेश में } वार्षिक - US \$ 50 US \$ 20
पंचवार्षिक - US \$ 200 US \$ 80

DVD (हार्ड कॉपी) हेतु सदस्यता शुल्क

भारत में } वार्षिक - ₹ 840
पंचवार्षिक - ₹ 4200

विदेश में } वार्षिक - US \$ 50
पंचवार्षिक - US \$ 200

सम्पर्क : ९८९८ २२० ६६६, (०७९) ३९८७७७७७/८८ Email: contact@rishidarshan.org visit: www.rishidarshan.org

* e-Rishi Darshan के लिए सदस्यता रसीद बुक न भरें।

स्वास्थ्य-गुणों से भरपूर त्रिदोषशामक, पौष्टिक खजूर

यह १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाला तथा त्रिदोषशामक है। यह तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाला, रक्त-मांस व वीर्य वर्धक, कब्जनाशक, कांतिवर्धक एवं हृदय व मस्तिष्क का टॉनिक है। होली के अवसर पर खजूर खाने और बाँटने की विशेष परम्परा है।

बारहों महीने कर सकते हैं खजूर का यथोचित उपयोग

खजूर खाने के फायदे इस्लाम जगत के लोग अच्छी तरह जानते हैं व बारहों महीने खाते हैं। भारत में जिनका पाचन कमजोर है उनको होली के बाद खजूर न खाने की बात कही गयी है, बाकी के लोग बारहों महीने खजूर का यथोचित उपयोग कर सकते हैं। खजूर स्वास्थ्य-गुणों से भरपूर है। इसे रात को भिगोने से इसकी गर्म तासीर का दोष मिट जाता है। होली के बाद खजूर का त्याग सभीके लिए उचित नहीं है। इस वर्ष सर्द मौसम का असर लम्बा चला है। अतः होली के बाद भी यथोचित मात्रा में खजूर खाना उचित है।



च्यवनप्राश

यह बल, वीर्य, स्मरणशक्ति व बुद्धि वर्धक है। बुढ़ापे को दूर रखता है व भूख बढ़ाता है। जीर्णज्वर, दौर्बल्य, शुक्रदोष, पुरानी खाँसी तथा फेफड़ों, मूत्राशय व हृदय के रोगों में विशेष लाभकारी है। यह दीर्घायु, चिरयौवन, प्रतिभा शक्ति देनेवाला है। स्वस्थ या बीमार, बालक, युवक, वृद्ध - सभी इसका सेवन कर सकते हैं।

१ किलो ₹ १६० | केसरयुक्त ₹ १९९



शुद्ध हीरा भस्मयुक्त वज्र रसायन टेबलेट

ये गोलियाँ देह को वज्र के समान दृढ़, तेजस्वी, कांतिमान तथा सुंदर बनानेवाली हैं। ये त्रिदोषशामक, जठराग्नि व वीर्य वर्धक एवं दीर्घायुष्य-प्रदायक हैं। मस्तिष्क को पुष्ट कर बुद्धि, स्मृति तथा इन्द्रियों की कार्यक्षमता बढ़ाती हैं। अस्थि व प्रजनन संस्थान हेतु विशेष लाभदायी हैं। कोशिकाओं के निर्माण में सहायक हैं। ये हृदयरोग, लकवा (paralysis), सायटिका, संधिवात, कमजोरी, दमा, आँखों के रोग, गर्भाशय व मस्तिष्क संबंधी रोग आदि में शीघ्र लाभदायी हैं। नपुंसकता को दूर करने के लिए यह अद्वितीय औषधि है।



स्वास्थ्यप्रद व गुणकारी पलाश-फूलों का रंग

पलाश के फूल हमारे तन-मन-मति और पाचनतंत्र को पुष्ट करते हैं। इनका प्राकृतिक नारंगी रंग कफ, पित्त, दाह, सकष्ट मूत्र-प्रवृत्ति एवं वायु-संबंधी ८० प्रकार की बीमारियाँ, रक्तदोष तथा शरीर की अनावश्यक गर्मी का नाश करता है। शरीर की सप्तधातुओं व सप्तरंगों को संतुलित तथा त्वचा की सुरक्षा करता है। यह सूर्य की तीक्ष्ण किरणों के दुष्प्रभाव तथा मौसम-परिवर्तन से प्रकुपित होनेवाले रोगों से रक्षा करता है। रोगप्रतिकारक शक्ति तथा गर्मी सहने की शक्ति को बढ़ाता है।



उपरोक्त औषधियाँ व रंग सत्साहित्य सेवाकेन्द्रों एवं संत श्री आशारामजी आश्रम की समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त कर सकते हैं। रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क करें : (०७९) ३९८७७७३०, ई-मेल : contact@ashramstore.com अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramstore.com

अहमदाबाद आश्रम में हुए उत्तरायण शिविर के नजारे

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2018-20
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)
Licence to Post Without Pre-payment.
WPP No. 08/18-20
(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2020)
Posting at Dehradun G.P.O. between
1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Feb 2019

युवा दिवस पर युवा सेवा संघ द्वारा राष्ट्र जागृति यात्राएँ



भिलाई
जि. दुर्ग (छ.ग.)

झाबुआ
(म.प्र.)

कोलकाता

ऋषि प्रसाद सम्मेलन के पूर्व निकली शोभायात्रा



अनसूया आश्रम - अहमदाबाद

महिला
उत्थान
मंडल द्वारा
'चलें स्व
की ओर...'
शिविर

देशभर में हो रहे मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रमों के कुछ दृश्य



आदिवासी एवं जरूरतमंदों में हुए भंडारे

कम्बल, कपड़े, नोटबुक आदि अनेक
जीवनोपयोगी सामग्रियों का हुआ वितरण



प्रयागराज कुम्भ एवं दिल्ली में 'नयी खबर' पुस्तिका व 'ऋषि प्रसाद' सुप्रचार अभियान



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।